॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रीमद्भगवद्गीता
साधक-संजीवनी (परिशिष्ट)
अथ प्रथमोऽध्यायः
(पहला अध्याय)

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय॥ १॥

धृतराष्ट्र बोले—

सञ्जय	= हे संजय!	**युयुत्सवः**	= युद्धकी इच्छावाले	**पाण्डवाः**	= पाण्डुके पुत्रोंने
धर्मक्षेत्रे	= धर्मभूमि			**एव**	= भी
कुरुक्षेत्रे	= कुरुक्षेत्रमें	**मामकाः**	= मेरे	**किम्**	= क्या
समवेताः	= इकट्ठे हुए	**च**	= और	**अकुर्वत**	= किया?

विशेष भाव—'मेरे पुत्र' (**मामकाः**) और 'पाण्डुके पुत्र' (**पाण्डवाः**) —इस मतभेदसे ही राग-द्वेष पैदा हुए, जिससे लड़ाई हुई, हलचल हुई। धृतराष्ट्रके भीतर पैदा हुए राग-द्वेषका फल यह हुआ कि सौ-के-सौ कौरव मारे गये, पर पाण्डव एक भी नहीं मारा गया!

जैसे दही बिलोते हैं तो उसमें हलचल पैदा होती है, जिससे मक्खन निकलता है, ऐसे ही '**मामकाः**' और '**पाण्डवाः**' के भेदसे पैदा हुई हलचलसे अर्जुनके मनमें कल्याणकी अभिलाषा जाग्रत् हुई, जिससे भगवद्गीतारूपी मक्खन निकला!

तात्पर्य यह हुआ कि धृतराष्ट्रके मनमें होनेवाली हलचलसे लड़ाई पैदा हुई और अर्जुनके मनमें होनेवाली हलचलसे गीता प्रकट हुई!

~~~

सञ्जय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा।
आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत्॥ २॥

संजय बोले—

तदा	= उस समय	**दृष्ट्वा**	= देखकर	**राजा**	= राजा
व्यूढम्	= वज्रव्यूहसे खड़ी हुई	**तु**	= और	**दुर्योधनः**	= दुर्योधन (यह)
		आचार्यम्	= द्रोणाचार्यके	**वचनम्**	= वचन
पाण्डवानीकम्	= पाण्डवसेनाको	**उपसङ्गम्य**	= पास जाकर	**अब्रवीत्**	= बोला।

~~~

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता॥ ३॥

आचार्य = हे आचार्य!
तव = आपके
धीमता = बुद्धिमान्
शिष्येण = शिष्य
द्रुपदपुत्रेण = द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्नके द्वारा
व्यूढाम् = व्यूहरचनासे खड़ी की हुई
पाण्डुपुत्राणाम् = पाण्डवोंकी
एताम् = इस
महतीम् = बड़ी भारी
चमूम् = सेनाको
पश्य = देखिये।

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः॥ ४॥
धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः॥ ५॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः॥ ६॥

अत्र = यहाँ (पाण्डवोंकी सेनामें)
शूराः = बड़े-बड़े शूरवीर हैं,
महेष्वासाः = (जिनके) बहुत बड़े-बड़े धनुष हैं
च = तथा (जो)
युधि = युद्धमें
भीमार्जुनसमाः = भीम और अर्जुनके समान हैं। (उनमें)
युयुधानः = युयुधान (सात्यकि),
विराटः = राजा विराट
च = और
महारथः = महारथी
द्रुपदः = द्रुपद (भी हैं।)
धृष्टकेतुः = धृष्टकेतु
च = और
चेकितानः = चेकितान
च = तथा
वीर्यवान् = पराक्रमी
काशिराजः = काशिराज (भी हैं)
पुरुजित् = पुरुजित्
च = और
कुन्तिभोजः = कुन्तिभोज (—ये दोनों भाई)
च = तथा
नरपुङ्गवः = मनुष्योंमें श्रेष्ठ
शैब्यः = शैब्य (भी हैं।)
विक्रान्तः = पराक्रमी
युधामन्युः = युधामन्यु
च = और
वीर्यवान् = पराक्रमी
उत्तमौजाः = उत्तमौजा (भी हैं।)
सौभद्रः = सुभद्रापुत्र अभिमन्यु
च = और
द्रौपदेयाः = द्रौपदीके पाँचों पुत्र (भी हैं।)
सर्वे, एव = (ये) सब-के-सब
महारथाः = महारथी हैं।

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम।
नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते॥ ७॥

द्विजोत्तम = हे द्विजोत्तम!
अस्माकम् = हमारे पक्षमें
तु = भी
ये = जो
विशिष्टाः = मुख्य (हैं),
तान् = उनपर (भी आप)
निबोध = ध्यान दीजिये।
ते = आपको
सञ्ज्ञार्थम् = याद दिलानेके लिये
मम = मेरी
सैन्यस्य = सेनाके (जो)
नायकाः = नायक हैं,
तान् = उनको (मैं)
ब्रवीमि = कहता हूँ।

भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च॥ ८॥

भवान्	= आप (द्रोणाचार्य)	**कर्णः**	= कर्ण	**एव**	= ही
च	= और	**च**	= और	**अश्वत्थामा**	= अश्वत्थामा,
भीष्मः	= पितामह भीष्म	**समितिञ्जयः**	= संग्रामविजयी	**विकर्णः**	= विकर्ण
च	= तथा	**कृपः**	= कृपाचार्य	**च**	= और
		च	= तथा	**सौमदत्तिः**	= सोमदत्तका पुत्र भूरिश्रवा।
		तथा	= वैसे		

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः॥ ९॥

अन्ये	= इनके अतिरिक्त		इच्छाका भी त्याग कर दिया है,		वाले हैं (तथा जो)
बहवः	= बहुत-से	**च**	= और	**सर्वे**	= सब-के-सब
शूराः	= शूरवीर हैं, (जिन्होंने)	**नानाशस्त्रप्रहरणाः**	= जो अनेक प्रकारके अस्त्र-शस्त्रोंको चलाने-	**युद्धविशारदाः**	= युद्धकलामें अत्यन्त चतुर हैं।
मदर्थे	= मेरे लिये				
त्यक्तजीविताः	= अपने जीनेकी				

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्॥ १०॥

द्रोणाचार्यको चुप देखकर दुर्योधनके मनमें विचार हुआ कि वास्तवमें—

अस्माकम्	= हमारी	**भीष्माभिरक्षितम्**	= उसके संरक्षक (उभयपक्षपाती) भीष्म हैं।		विजय करनेमें)
तत्	= वह	**तु**	= परन्तु	**पर्याप्तम्**	= पर्याप्त है, समर्थ है; (क्योंकि)
बलम्	= सेना (पाण्डवोंपर विजय करनेमें)	**एतेषाम्**	= इन पाण्डवोंकी	**भीमाभिरक्षितम्**	= इसके संरक्षक (निजसेनापक्षपाती) भीमसेन हैं।
अपर्याप्तम्	= अपर्याप्त है, असमर्थ है; (क्योंकि)	**इदम्**	= यह		
		बलम्	= सेना (हमपर		

विशेष भाव—अर्जुनने अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित नारायणी सेनाको छोड़कर निःशस्त्र भगवान् श्रीकृष्णको स्वीकार किया था* और दुर्योधनने भगवान्को छोड़कर उनकी नारायणी सेनाको स्वीकार किया था। तात्पर्य है

* **एवमुक्तस्तु कृष्णेन कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः। अयुध्यमानं संग्रामे वरयामास केशवम्॥** (महा० उद्योग० ७। २१)

'श्रीकृष्णके ऐसा कहनेपर कुन्तीकुमार धनंजयने संग्रामभूमिमें (अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित एक अक्षौहिणी नारायणी सेनाको छोड़कर) युद्ध न करनेवाले निःशस्त्र उन भगवान् श्रीकृष्णको ही (अपना सहायक) चुना।'

कि अर्जुनकी दृष्टि भगवान्‌पर थी और दुर्योधनकी दृष्टि वैभवपर थी। जिसकी दृष्टि भगवान्‌पर होती है, उसका हृदय बलवान् होता है; क्योंकि भगवान्‌का बल सच्चा है। परन्तु जिसकी दृष्टि सांसारिक वैभवपर होती है, उसका हृदय कमजोर होता है; क्योंकि संसारका बल कच्चा है।

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि॥ ११॥

च	=दुर्योधन बाह्यदृष्टिसे		लोग		रहते हुए
	अपनी सेनाके	**सर्वेषु**	=सभी	**हि**	=निश्चितरूपसे
	महारथियोंसे	**अयनेषु**	=मोर्चोंपर	**भीष्मम्**	=पितामह भीष्मकी
	बोला—	**यथाभागम्**	=अपनी-अपनी	**एव**	=ही
भवन्तः	=आप		जगह	**अभिरक्षन्तु**	=चारों ओरसे रक्षा
सर्वे, एव	=सब-के-सब	**अवस्थिताः**	=दृढ़तासे स्थित		करें।

तस्य सञ्जनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्॥ १२॥

तस्य	=उस (दुर्योधन) के	**कुरुवृद्धः**	=कौरवोंमें वृद्ध	**विनद्य**	=गरजकर
हर्षम्	=(हृदयमें) हर्ष	**प्रतापवान्**	=प्रभावशाली	**उच्चैः**	=जोरसे
सञ्जनयन्	=उत्पन्न करते	**पितामहः**	=पितामह भीष्मने	**शङ्खम्**	=शंख
	हुए	**सिंहनादम्**	=सिंहके समान	**दध्मौ**	=बजाया।

विशेष भाव—दुर्योधनके साथ द्रोणाचार्यका विद्याका सम्बन्ध था और भीष्मजीका जन्मका अर्थात् कौटुम्बिक सम्बन्ध था। जहाँ विद्याका सम्बन्ध होता है, वहाँ पक्षपात नहीं होता, पर जहाँ कौटुम्बिक सम्बन्ध होता है, वहाँ स्नेहवश पक्षपात हो जाता है। अतः दुर्योधनके द्वारा चालाकीसे कहे गये वचन सुनकर द्रोणाचार्य चुप रहे, जिससे दुर्योधनका मानसिक उत्साह भंग हो गया। परन्तु दुर्योधनको उदास देखकर कौटुम्बिक स्नेहके कारण भीष्मजी शंख बजाते हैं।

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्॥ १३॥

ततः	=उसके बाद	**पणवानकगोमुखाः**	=ढोल,	**अभ्यहन्यन्त**	=बज उठे। (उनका)
शङ्खाः	=शंख		मृदंग और	**सः**	=वह
च	=और		नरसिंघे बाजे	**शब्दः**	=शब्द
भेर्यः	=भेरी (नगाड़े)	**सहसा**	=एक साथ	**तुमुलः**	=बड़ा भयंकर
च	=तथा	**एव**	=ही	**अभवत्**	=हुआ।

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः॥ १४॥

ततः	=उसके बाद
श्वेतैः	=सफेद
हयैः	=घोड़ोंसे
युक्ते	=युक्त
महति	=महान्
स्यन्दने	=रथपर
स्थितौ	=बैठे हुए
माधवः	=लक्ष्मीपति भगवान् श्रीकृष्ण
च	=और
पाण्डवः	=पाण्डुपुत्र अर्जुनने
एव	=भी
दिव्यौ	=दिव्य
शङ्खौ	=शंखोंको
प्रदध्मतुः	=बड़े जोरसे बजाया।

~~~

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः॥ १५॥

हृषीकेशः	=अन्तर्यामी भगवान् श्रीकृष्णने
पाञ्चजन्यम्	=पाञ्चजन्य नामक (तथा)
धनञ्जयः	=धनंजय अर्जुनने
देवदत्तम्	=देवदत्त नामक (शंख बजाया और)
भीमकर्मा	=भयानक कर्म करनेवाले
वृकोदरः	=वृकोदर भीमने
पौण्ड्रम्	=पौण्ड्र नामक
महाशङ्खम्	=महाशंख
दध्मौ	=बजाया।

~~~

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ॥ १६॥

कुन्तीपुत्रः	=कुन्तीपुत्र
राजा	=राजा
युधिष्ठिरः	=युधिष्ठिरने
अनन्तविजयम्	=अनन्तविजय नामक (शंख बजाया तथा)
नकुलः	=नकुल
च	=और
सहदेवः	=सहदेवने
सुघोषमणिपुष्पकौ	=सुघोष और मणिपुष्पक नामक (शंख बजाये)।

~~~

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः॥ १७॥
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते।
सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक्॥ १८॥

पृथिवीपते	=हे राजन्!
परमेष्वासः	=श्रेष्ठ धनुषवाले
काश्यः	=काशिराज
च	=और
महारथः	=महारथी
शिखण्डी	=शिखण्डी
च	=तथा
धृष्टद्युम्नः	=धृष्टद्युम्न
च	=एवं
विराटः	=राजा विराट
च	=और
अपराजितः	=अजेय
सात्यकिः	=सात्यकि,
द्रुपदः	=राजा द्रुपद
च	=और
द्रौपदेयाः	=द्रौपदीके पाँचों पुत्र
च	=तथा
महाबाहुः	=लम्बी-लम्बी भुजाओंवाले
सौभद्रः	=सुभद्रापुत्र अभिमन्यु (—इन सभीने)
सर्वशः	=सब ओरसे
पृथक्, पृथक्	=अलग-अलग (अपने-अपने)
शङ्खान्	=शंख
दध्मुः	=बजाये।

~~~

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्॥ १९॥

च	= और
सः	= (पाण्डव-सेनाके शंखोंके) उस
तुमुलः	= भयंकर
घोषः	= शब्दने
नभः	= आकाश
च	= और
पृथिवीम्	= पृथ्वीको
एव	= भी
व्यनुनादयन्	= गुँजाते हुए
धार्तराष्ट्राणाम्	= अन्यायपूर्वक राज्य हड़पनेवाले दुर्योधन आदिके
हृदयानि	= हृदय
व्यदारयत्	= विदीर्ण कर दिये।

~~~

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः।
प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः॥ २०॥
हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।

महीपते	= हे महीपते धृतराष्ट्र!
अथ	= अब
शस्त्रसम्पाते	= शस्त्र चलनेकी
प्रवृत्ते	= तैयारी हो ही रही थी कि
तदा	= उस समय
धार्तराष्ट्रान्	= अन्यायपूर्वक राज्यको धारण करनेवाले राजाओं और उनके साथियोंको
व्यवस्थितान्	= व्यवस्थितरूपसे सामने खड़े हुए
दृष्ट्वा	= देखकर
कपिध्वजः	= कपिध्वज
पाण्डवः	= पाण्डुपुत्र अर्जुनने
धनुः	= (अपना) गाण्डीव धनुष
उद्यम्य	= उठा लिया (और)
हृषीकेशम्	= अन्तर्यामी भगवान् श्रीकृष्णसे
इदम्	= यह
वाक्यम्	= वचन
आह	= बोले।

~~~

अर्जुन उवाच

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत॥ २१॥
यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे॥ २२॥

अर्जुन बोले—

अच्युत	= हे अच्युत!
उभयोः	= दोनों
सेनयोः	= सेनाओंके
मध्ये	= मध्यमें
मे	= मेरे
रथम्	= रथको (आप तबतक)
स्थापय	= खड़ा कीजिये,
यावत्	= जबतक
अहम्	= मैं (युद्धक्षेत्रमें)
अवस्थितान्	= खड़े हुए
एतान्	= इन
योद्धुकामान्	= युद्धकी इच्छावालोंको
निरीक्षे	= देख न लूँ कि
अस्मिन्	= इस
रणसमुद्यमे	= युद्धरूप उद्योगमें
मया	= मुझे
कैः	= किन-किनके
सह	= साथ
योद्धव्यम्	= युद्ध करना योग्य है।

~~~
~~~

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः॥ २३॥

दुर्बुद्धेः	= दुष्टबुद्धि	**ये**	= जो		उतावले
धार्तराष्ट्रस्य	= दुर्योधनका	**एते**	= ये राजालोग		हुए (इन
युद्धे	= युद्धमें	**अत्र**	= इस सेनामें		सबको)
प्रियचिकीर्षवः	= प्रिय करनेकी	**समागताः**	= आये हुए हैं,	**अहम्**	= मैं
	इच्छावाले	**योत्स्यमानान्**	= युद्ध करनेको	**अवेक्षे**	= देख लूँ।

~~~~

सञ्जय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम्॥ २४॥
भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति॥ २५॥

संजय बोले—

भारत	= हे भरतवंशी	**सेनयोः**	= सेनाओंके	**रथोत्तमम्**	= श्रेष्ठ रथको
	राजन्!	**मध्ये**	= मध्यभागमें	**स्थापयित्वा**	= खड़ा करके
गुडाकेशेन	= निद्राविजयी	**भीष्मद्रोणप्रमुखतः**	= पितामह	**इति**	= इस प्रकार
	अर्जुनके द्वारा		भीष्म और	**उवाच**	= कहा कि
एवम्	= इस तरह		आचार्य द्रोणके	**पार्थ**	= 'हे पार्थ!
उक्तः	= कहनेपर		सामने	**एतान्**	= इन
हृषीकेशः	= अन्तर्यामी भगवान्	**च**	= तथा	**समवेतान्**	= इकट्ठे हुए
	श्रीकृष्णने	**सर्वेषाम्**	= सम्पूर्ण	**कुरून्**	= कुरुवंशियोंको
उभयोः	= दोनों	**महीक्षिताम्**	= राजाओंके सामने	**पश्य**	= देख।'

~~~~

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान्।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा॥ २६॥
श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि।

अथ	= उसके बाद	**पितॄन्**	= पिताओंको,	**तथा**	= तथा
पार्थः	= पृथानन्दन अर्जुनने	**पितामहान्**	= पितामहोंको,	**सखीन्**	= मित्रोंको,
तत्र	= उन	**आचार्यान्**	= आचार्योंको,	**श्वशुरान्**	= ससुरोंको
उभयोः	= दोनों	**मातुलान्**	= मामाओंको,	**च**	= और
एव	= ही	**भ्रातॄन्**	= भाइयोंको,	**सुहृदः**	= सुहृदोंको
सेनयोः	= सेनाओंमें	**पुत्रान्**	= पुत्रोंको,	**अपि**	= भी
स्थितान्	= स्थित	**पौत्रान्**	= पौत्रोंको	**अपश्यत्**	= देखा।

~~~~
~~~~

तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्॥ २७॥
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।

शब्द	अर्थ
अवस्थितान्	=अपनी-अपनी जगहपर स्थित
तान्	=उन
सर्वान्	=सम्पूर्ण
बन्धून्	=बान्धवोंको
समीक्ष्य	=देखकर
सः	=वे
कौन्तेयः	=कुन्तीनन्दन अर्जुन
परया	=अत्यन्त
कृपया	=कायरतासे
आविष्टः	=युक्त होकर
विषीदन्	=विषाद करते हुए
इदम्	=ऐसा
अब्रवीत्	=बोले।

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम्॥ २८॥
सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते॥ २९॥
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः॥ ३०॥

अर्जुन बोले—

शब्द	अर्थ
कृष्ण	=हे कृष्ण!
युयुत्सुम्	=युद्धकी इच्छावाले
इमम्	=इस
स्वजनम्	=कुटुम्ब-समुदायको
समुपस्थितम्	=अपने सामने उपस्थित
दृष्ट्वा	=देखकर
मम	=मेरे
गात्राणि	=अंग
सीदन्ति	=शिथिल हो रहे हैं
च	=और
मुखम्	=मुख
परिशुष्यति	=सूख रहा है
च	=तथा
मे	=मेरे
शरीरे	=शरीरमें
वेपथुः	=कँपकँपी (आ रही है)
च	=एवं
रोमहर्षः	=रोंगटे खड़े
जायते	=हो रहे हैं।
हस्तात्	=हाथसे
गाण्डीवम्	=गाण्डीव धनुष
स्रंसते	=गिर रहा है
च	=और
त्वक्	=त्वचा
एव	=भी
परिदह्यते	=जल रही है।
मे	=मेरा
मनः	=मन
भ्रमति, इव	=भ्रमित-सा हो रहा है
च	=और (मैं)
अवस्थातुम्	=खड़े रहनेमें
च	=भी
न, शक्नोमि	=असमर्थ हो रहा हूँ।

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे॥ ३१॥

शब्द	अर्थ
केशव	=हे केशव! (मैं)
निमित्तानि	=लक्षणों (शकुनों) को
च	=भी
विपरीतानि	=विपरीत
पश्यामि	=देख रहा हूँ (और)
आहवे	=युद्धमें
स्वजनम्	=स्वजनोंको
हत्वा	=मारकर
श्रेयः	=श्रेय (लाभ)
च	=भी
न	=नहीं
अनुपश्यामि	=देख रहा हूँ।

न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा॥ ३२॥

कृष्ण	=हे कृष्ण! (मैं)	**च**	=और	**राज्येन**	=राज्यसे
न	=न (तो)	**न**	=न	**किम्**	=क्या लाभ?
विजयम्	=विजय	**सुखानि**	=सुखोंको (ही चाहता हूँ)।	**भोगैः**	=भोगोंसे (क्या लाभ?)
काङ्क्षे	=चाहता हूँ,			**वा**	=अथवा
न	=न	**गोविन्द**	=हे गोविन्द!	**जीवितेन**	=जीनेसे (भी)
राज्यम्	=राज्य (चाहता हूँ)	**नः**	=हमलोगोंको	**किम्**	=क्या लाभ?

~~~

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च॥ ३३॥

येषाम्	=जिनके	**सुखानि**	=सुखकी	**च**	=और
अर्थे	=लिये	**काङ्क्षितम्**	=इच्छा है,	**धनानि**	=धनकी आशाका
नः	=हमारी	**ते**	=वे (ही)		
राज्यम्	=राज्य,	**इमे**	=ये सब (अपने)	**त्यक्त्वा**	=त्याग करके
भोगाः	=भोग			**युद्धे**	=युद्धमें
च	=और	**प्राणान्**	=प्राणोंकी	**अवस्थिताः**	=खड़े हैं।

~~~

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा॥ ३४॥
एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते॥ ३५॥

आचार्याः	=आचार्य,	**तथा**	=तथा (अन्य जितने भी)	**मधुसूदन**	=हे मधुसूदन!(मुझे)
पितरः	=पिता,			**त्रैलोक्य-**	
पुत्राः	=पुत्र	**सम्बन्धिनः**	=सम्बन्धी हैं, (मुझपर)	**राज्यस्य**	=त्रिलोकीका राज्य
च	=और			**हेतोः**	=मिलता हो
तथा, एव	=उसी प्रकार	**घ्नतः**	=प्रहार करनेपर	**अपि**	=तो भी (मैं इनको मारना नहीं चाहता),
पितामहाः	=पितामह,	**अपि**	=भी (मैं)		
मातुलाः	=मामा,	**एतान्**	=इनको	**नु**	=फिर
श्वशुराः	=ससुर,	**हन्तुम्**	=मारना	**महीकृते**	=पृथ्वीके लिये तो (मैं इनको मारूँ ही)
पौत्राः	=पौत्र,	**न**	=नहीं		
श्यालाः	=साले	**इच्छामि**	=चाहता, (और)	**किम्**	=क्या?

~~~
~~~

निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन।
पापमेवाश्रयेदस्मान्　हत्वैतानाततायिनः॥ ३६॥

जनार्दन =हे जनार्दन! (इन)
धार्तराष्ट्रान् =धृतराष्ट्र-सम्बन्धियोंको
निहत्य =मारकर
नः =हमलोगोंको
का =क्या
प्रीतिः =प्रसन्नता
स्यात् =होगी?
एतान् =इन
आततायिनः =आततायियोंको
हत्वा =मारनेसे तो
अस्मान् =हमें
पापम् =पाप
एव =ही
आश्रयेत् =लगेगा।

~~~

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान्।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव॥ ३७॥

तस्मात् =इसलिये
स्वबान्धवान् =अपने बान्धव (इन)
धार्तराष्ट्रान् =धृतराष्ट्र-सम्बन्धियोंको
हन्तुम् =मारनेके लिये
वयम् =हम
न, अर्हाः =योग्य नहीं हैं;
हि =क्योंकि
माधव =हे माधव!
स्वजनम् =अपने कुटुम्बियोंको
हत्वा =मारकर (हम)
कथम् =कैसे
सुखिनः =सुखी
स्याम =होंगे?

~~~

यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम्॥ ३८॥
कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम्।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन॥ ३९॥

यद्यपि =यद्यपि
लोभोपहतचेतसः =लोभके कारण जिनका विवेक-विचार लुप्त हो गया है, ऐसे
एते =ये (दुर्योधन आदि)
कुलक्षयकृतम् =कुलका नाश करनेसे होनेवाले
दोषम् =दोषको
च =और
मित्रद्रोहे =मित्रोंके साथ द्वेष करनेसे होनेवाले
पातकम् =पापको
न =नहीं
पश्यन्ति =देखते, (तो भी)
जनार्दन =हे जनार्दन!
कुलक्षयकृतम् =कुलका नाश करनेसे होनेवाले
दोषम् =दोषको
प्रपश्यद्भिः =ठीक-ठीक जाननेवाले
अस्माभिः =हम लोग
अस्मात् =इस
पापात् =पापसे
निवर्तितुम् =निवृत्त होनेका
ज्ञेयम् =विचार
कथम् =क्यों
न =न करें?

~~~

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत॥ ४०॥

कुलक्षये =कुलका क्षय होनेपर
सनातनाः =सदासे चलते आये
कुलधर्माः =कुलधर्म
प्रणश्यन्ति =नष्ट हो जाते हैं
उत =और
धर्मे =धर्मका
नष्टे =नाश होनेपर (बचे हुए)
कृत्स्नम् =सम्पूर्ण
कुलम् =कुलको
अधर्मः =अधर्म
अभिभवति =दबा लेता है।

~~~

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः॥ ४१॥

कृष्ण =हे कृष्ण!
अधर्माभिभवात् = अधर्मके अधिक बढ़ जानेसे
कुलस्त्रियः =कुलकी स्त्रियाँ
प्रदुष्यन्ति =दूषित हो जाती हैं (और)
वार्ष्णेय =हे वार्ष्णेय!
स्त्रीषु =स्त्रियोंके
दुष्टासु =दूषित होनेपर
वर्णसङ्करः =वर्णसंकर
जायते =पैदा हो जाते हैं।

सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः॥ ४२॥

सङ्करः =वर्णसंकर
कुलघ्नानाम् =कुलघातियोंको
च =और
कुलस्य =कुलको
नरकाय =नरकमें ले जानेवाला
एव =ही (होता है)।
लुप्तपिण्डोदकक्रियाः = श्राद्ध और तर्पण न मिलनेसे
एषाम् =इन (कुलघातियों) के
पितरः =पितर
हि =भी (अपने स्थानसे)
पतन्ति =गिर जाते हैं।

विशेष भाव—पितरोंमें एक 'आजान' पितर होते हैं और एक 'मर्त्य' पितर। पितरलोकमें रहनेवाले पितर 'आजान' हैं और मनुष्यलोकसे मरकर गये पितर 'मर्त्य' हैं। श्राद्ध और तर्पण न मिलनेसे मर्त्य पितरोंका पतन होता है। पतन उन्हीं मर्त्य पितरोंका होता है, जो कुटुम्बसे, सन्तानसे सम्बन्ध रखते हैं और उनसे श्राद्ध-तर्पणकी आशा रखते हैं।

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः॥ ४३॥

एतैः =इन
वर्णसङ्करकारकैः =वर्णसंकर पैदा करनेवाले
दोषैः =दोषोंसे
कुलघ्नानाम् =कुलघातियोंके
शाश्वताः =सदासे चलते आये
कुलधर्माः =कुलधर्म
च =और
जातिधर्माः =जातिधर्म
उत्साद्यन्ते =नष्ट हो जाते हैं।

उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम॥ ४४॥

जनार्दन =हे जनार्दन!
उत्सन्नकुलधर्माणाम् = जिनके कुलधर्म नष्ट हो जाते हैं,
मनुष्याणाम् =(उन) मनुष्योंका
अनियतम् =बहुत कालतक
नरके =नरकोंमें
वासः =वास
भवति =होता है,
इति =ऐसा (हम)
अनुशुश्रुम =सुनते आये हैं।

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः॥ ४५॥

अहो	=यह बड़े आश्चर्य (और)	**महत्पापम्**	=बड़ा भारी पाप	**राज्यसुखलोभेन**	= राज्य और सुखके लोभसे
बत	=खेदकी बात है कि	**कर्तुम्**	=करनेका	**स्वजनम्**	=अपने स्वजनोंको
वयम्	=हमलोग	**व्यवसिताः**	=निश्चय कर बैठे हैं,	**हन्तुम्**	=मारनेके लिये
		यत्	=जो कि	**उद्यताः**	=तैयार हो गये हैं।

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत्॥ ४६॥

यदि	=अगर (ये)	**रणे**	=युद्धभूमिमें	**हन्युः**	=मार भी दें (तो)
शस्त्रपाणयः	=हाथोंमें शस्त्र-अस्त्र लिये हुए	**अप्रतीकारम्**	=सामना न करनेवाले	**तत्**	=वह
धार्तराष्ट्राः	=धृतराष्ट्रके पक्षपाती लोग	**अशस्त्रम्**	=(तथा) शस्त्ररहित	**मे**	=मेरे लिये
		माम्	=मुझे	**क्षेमतरम्**	=बड़ा ही हितकारक
				भवेत्	=होगा।

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः सङ्ख्ये रथोपस्थ उपाविशत्।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः॥ ४७॥

संजय बोले—

एवम्	=ऐसा	**अर्जुनः**	=अर्जुन	**सङ्ख्ये**	=युद्धभूमिमें
उक्त्वा	=कहकर	**सशरम्**	=बाणसहित	**रथोपस्थे**	=रथके मध्यभागमें
शोकसंविग्नमानसः	= शोकाकुल मनवाले	**चापम्**	=धनुषका	**उपाविशत्**	=बैठ गये।
		विसृज्य	=त्याग करके		

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

विशेष भाव—गीताकी पुष्पिकामें '**ब्रह्मविद्यायाम्**', '**योगशास्त्रे**' और '**श्रीकृष्णार्जुनसंवादे**'—ये तीन पद तो एकवचनमें आये हैं, पर '**श्रीमद्भगवद्गीतासु**' और '**उपनिषत्सु**'— ये दो पद बहुवचनमें आये हैं। इसका तात्पर्य है कि भगवद्वाणी सम्पूर्ण उपनिषदोंमें श्रीमद्भगवद्गीता भी एक उपनिषद् है, जिसमें 'ब्रह्मविद्या' (ज्ञानयोग), 'योगशास्त्र' (कर्मयोग) और 'श्रीकृष्णार्जुनसंवाद' (भक्तियोग)—तीनों आये हैं।

गीतामें 'श्रीकृष्णार्जुनसंवाद' का आरम्भ और अन्त भक्तिमें ही हुआ है। आरम्भमें अर्जुन किंकर्तव्यविमूढ़ होकर भगवान्‌के शरण होते हैं—'**शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्**' (२। ७) और अन्तमें भगवान्‌के द्वारा '**मामेकं शरणं व्रज**' पदोंसे पूर्ण शरणागतिकी प्रेरणा करनेपर अर्जुन पूर्णतया शरणागत हो जाते हैं—'**करिष्ये वचनं तव**' (१८। ७३)। अर्जुनने अपने श्रेय (कल्याण) का उपाय पूछा था (२। ७, ३। २, ५। १), इसलिये भगवान्‌ने गीतामें 'ज्ञानयोग' और 'कर्मयोग' का भी वर्णन किया है।